UP Board Notes for Class 9 Hindi Chapter 11
केदारनाथ अग्रवाल (काव्य-खण्ड)

(अच्छा होता)

1. अच्छा होता ..... कच्चा होता।

सन्दर्भ – प्रस्तुत काव्य-पंक्तियाँ केदारनाथ अग्रवाल द्वारा रचित 'अच्छा होता' नामक कविता से उधृत की गयी हैं।

प्रसंग – प्रस्तुत पंक्तियों में कवि आदमी को एक अच्छा इन्सान बनाने की इच्छा करता है जो स्वार्थ रहित और सदचरित्र हो। क्योंकि आज व्यक्ति का चारित्रिक पतन हो चुका है। वह पूर्णतया स्वार्थी बन गया है। कवि एक स्वस्थ समाज की कल्पना करता है।

व्याख्या – कवि कहता है कि यह देश और समाज के लिए बहुत अच्छा होता जब एक आदमी दूसरे आदमी के हित में काम करता। वह स्वार्थी न होकर परोपकारी होता । उसकी नियति स्वच्छ और साफ होती तो यह देश और समाज के लिए बहुत अच्छा होता। वह स्वार्थी और दागी न होकर नि:स्वार्थी और निष्कलंक होता तो बहुत बेहतर होता। आगे वह यह भी कहता है कि व्यक्ति को सचरित्र का होना चाहिए। कहीं भी व्यक्ति के चरित्र में खोट नहीं होना चाहिए। क्योंकि एक सद्चरित्रवान व्यक्ति ही अच्छे आचरण का व्यवहार करने में सक्षम है। कवि एक स्वच्छ समाज की कल्पना की है जिसमें जन-साधारण को भी कष्ट न हो।

काव्यगत सौन्दर्य

- इन पंक्तियों में कवि एक स्वच्छ समाज की कल्पना की है, जो परोपकार एवं नि:स्वार्थपूर्ण हो।
- भाषा-सहज, स्वाभाविक एवं बोधगम्य।

2. अच्छा होता
..... बराती
होता।

सन्दर्भ – प्रस्तुत पद्य-पंक्तियाँ केदारनाथ अग्रवाल द्वारा रचित 'अच्छा होता' शीर्षक कविता से उद्धृत हैं।

प्रसंग – इन पंक्तियों में भी कवि ने समाज को मानवता का सन्देश दिया है। वह एक भयमुक्त एवं स्वार्थ-रहित समाज की कल्पना करता है।

व्याख्या – कवि कहता है कि यह कितना अच्छा होता कि जब आदमी, आदमी के लिए मर-मिटने को तैयार रहता। आदमी, आदमी के दु:ख-दर्द में शामिल होता। दूसरे का हित करने वाला, दूसरे के सुख-दु:ख को बाँटने वाला व्यक्ति सबको प्रिय होता है। आज आदमी ईमानदारी की धज्जियाँ उड़ा रहा है, ठगी में लिप्त है। चारों तरफ मौत का ताण्डव है। यदि ये सब न होते तो समाज कितना खुशहाल होता । समाज में अमन-चैन कायम हो जाता समाज में आज इतनी ठगी है, हिंसा एवं रक्तपात है जिसके चलते एक स्वच्छ समाज की कल्पना साकार नहीं हो सकती है।

काव्यगत सौन्दर्य

- प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने मानवता का संदेश दिया है। मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों में, "वही मनुष्य, मनुष्य है जो मनुष्य के लिए मरे।"
- भाषा-सरल एवं बोधगम्य।

(सितार-संगीत की रात)

1. आग के ओंठ ..... चन्द्रमा के साथ।

सन्दर्भ – प्रस्तुत पद्य-पंक्तियाँ केदारनाथ अग्रवाल द्वारा रचित 'सितार-संगीत की रात' शीर्षक से उद्धृत हैं।

प्रसंग – प्रस्तुत पंक्तियों में सितार की बोल का वर्णन है।

व्याख्या – कवि कहता है कि सितार की ध्वनि जब निकलती है तो शहदयुक्त पंखुड़ियाँ खुलती चली जाती हैं। अँगुलियाँ नृत्य करने लगती हैं। रात के खुले आसमान पर चन्द्रमा के साथ जो ध्वनियाँ निकलती हैं, वह अत्यन्त मोहक होती हैं। कवि ने अग्निवत ओंठ के बोल की तुलना सितार के बोल से की है।

2. शताब्दियाँ ..... विचरण करती हैं।

सन्दर्भ – प्रस्तुत पद्य-पंक्तियाँ केदारनाथ अग्रवाल द्वारा रचित 'सितार-संगीत की रात' शीर्षक से उद्धृत हैं।

प्रसंग – प्रस्तुत पंक्तियों में संगीत का वर्णन है।

व्याख्या – कवि कहता है कि अनंत आकाश की खिड़कियों से मानो शताब्दियाँ झाँक रही हों। संगीत के इस समारोह में कौमार्य झलकता है। हर्ष रूपी हंस मानो दूध पर तैर रहा है। ऐसा मालूम पड़ रहा है जैसे धरती की सरस्वती हंस पर सवार होकर काव्य लोक में भ्रमण कर रही हैं।

https://www.evidyarthi.in/